शोध सारांश

विषय : "कवि राजानंद गडपायले का अंबेडकरी आंदोलन में योगदान"

अंबेडकरी आंदोलन के जन जागृती अभियान में राजानंदजी ने अपने आप को तन मन धन से समर्पित कर दिया था।मैंने उनके साहित्य का अभ्यास करने के बाद अनुभव किया की वह हर क्षण उनकी चिंता अंबेडकरी मिशन को स्थापित करने के लिए होती थी । उनके जैसे प्रतिभावान कवि एवं शायर का सहयोग यवतमाल को और यवतमाल के अंबेडकरी लोगों कों मिला यह अपने आप में बडी सौभाग्य की बात है। कवि राजानंद गडपायले यवतमाल के तो रत्न थे ही इतना ही नहीं तो वे अंबेडकरी मिशन के भी अनेक रत्नों में से एक थे। जिन्होंने अपनी कविताए एवं गायकी से सारा महाराष्ट्र अपने ओर खिचा था। उनके गीत एवं कविताए सभी महाराष्ट्र के अंबेडकरी अनुयायियों के होठों पर राज कर रहे थे। और आज भी उनके गीत उतने ही प्रभावशाली है। वे निश्चित रुप से मराठी कवि थे। अपनी वाणी और विचारों को उन्होंने बडे ही अच्छे ढंग से संजोडकर रखा था। वे आंदोलन के अच्छे और सच्छे सिपाई थे। उन्होंने आंदोलन में काम करते समय धन की कभी भी लालच नहीं की। अंबेडकरीआंदोलन को जब भी उनकी जरुरत पडी तब तब वे अपना सारा काम धाम छोड आंदोलन को उन्होंने अधिक महत्व दिया। वैसे भी आदमी के सामने हमेशा दो रास्ते होते है। पहला जीवन शैली और दूसरा समर्पन। जीवन शैली का अर्थ होता है अपने संसार में रममान होना। खाना पिना और मौज मजा करना। अपनी बिवी अपने बाल-बच्चे , अपना घर , टिव्ही , यही है जीवन शैली का अर्थ। दूसरा समर्पन का अर्थ होता है , आंदोलन को प्राथमिकता घर संसार बाद में। राजानंद गडपायले ने दूसरा पर्याय चुना और अंबेडकरी आंदोलन में पुरे शक्ती के साथ जुड गये।

समाज के लोगों को एक साथ जोडने के लिए अपनी कविताए और गितों के माध्यम से जकड रखा था। गडपायलेजी की रचनाए अंबेडकरी अनुयायी द्वारा बहुत सराही गई। प्रस्तुत कविताओं में एवं गीतों में डॉ. अंबेडकर के जीवन का एवं मिशन का और उस वक्त के सामाजिक परिस्थिति का वर्णन बडे रोचक ढंग से किया गया है। उन्होने कोई भी विषय को नहीं छोडा सभी विषय को स्पर्श किया। आज वर्तमान जगत के लिए कवि राजानंद गडपायले का नाम तथा उनका समर्पन हमें प्रेरणा देने के लिए अत्यंत महत्व पूर्ण हो गया है। कारण यह है कि वे मौलिक चिंतन के स्वामी होने के साथ साथ ही सफल अभिव्यक्ति के भी धनी थे। कवि गडपायले जैसा बहु प्रतिभा संपन्न विद्वान का साहित्य किसी भी व्यक्ति के लिए बहुत ही गौरव की बात है। वे कमाल के कवि , कमाल के गीतकार एवं उच्च कोटी के गायक थे।

वे यवतमाल में जन्में थे मगर सारा महाराष्ट्र उन्होंने अंबेडकरी आंदोलन के लिए चुना था। इतना ही नहीं तो वे भारत भर अंबेडकरी आंदोलन को अपने गीतों एवं कविताओंके माध्यम से जागृत करना चाहते थे। इसलिए उन्होंने अपने कार्य की गती तेज की थी दिन रात कार्य में जुट गये। अपनी सारी शक्ति अंबेडकरी आंदोलन के लिए लगा दी थी।

कवि राजानंद गडपायले के नाम को आज महाराष्ट्र में पहचान और प्रसिद्धी की जरुरी नहीं है। केवल राजानंद गडपायले का नाम ही अपने आप में एक पहचान है। अभिनय, गीत, कविताए एवं प्रबोधन के क्षेत्र में उनकी बेजोड पकड थी। जब मैं राजानंद गडपायले के बारे में जानने लगा मानो जैसा कोई अपना आंदोलनकारी मिल गया हो। वह उनकी साहित्य के माध्यम से सबको अपना बनाने की किमया रखते थे।

राजानंद गडपायले के गीत प्रसिद्ध गायक श्री कृष्णा शिंदे ने अपनी सुरेल और मधुर वाणी में गाये। श्री कृष्णा शिंदे के साथ प्रसिद्ध गायिका आशा भगत , उषा भगतऔर भी अन्य बहुत सारे गायकों ने गडपायलेजी के गीत गाये है। श्री कृष्णा शिंदे के गीत हिज मास्टर कंपनी (H.M.V) में ध्वनी मुद्रीत किये गये है। आज भी सारे महाराष्ट्र में एवं मराठी भागों में बजाये जाते है और सभीअंबेडकरी अनुयायी उतने ही चाव से सुनते है।

राजानंद गडपायले के गीतों का एवं कविताओं का मुख्य विषय अंबेडकरवादी आंदोलन था। साथ ही बाबा साहेब की जीवनी , रमाई , सामाजिक घटनाये ,अंबेडकरी अनुयायी के उपर होने वाले जुल्म , नैसर्गिक आपत्ती एवं नित्य घटनाये थी।

बाबा साहेब के विचार और बाबा साहेब का मिशन तेज और मजबुत बनाने का कार्य कवि राजानंद गडपायेलेने किया। कुछ कवि कुछ गीतकारों ने स्कुल को नहीं देखा तो कई शायर ऐसे भी थे उन्हें अ, आ, इ का भी पता नहीं था परंतु बाबा साहेब ऐसी शक्ति थी , कि पत्थर भी हिरा बन जाता था। समाज से अपने काम का उन्होने एक पैसा न लेते हुये कोई अपेक्षा ना रखते हुये केवल बाबा साहेब को लोगों के मन में बिठा ने की अंत:प्रेरणा उनकी थी ।

निष्कर्ष :-

लोककवि राजानंद गड़पायले के गीत 'भीमायन' से आम्बेडकर निष्ठा आदमी के मन में अभी तक इस तरह बैठ गई है कि वह भुलाए नहीं भूलती। आज सतिश अडसुळ नहीं है पर उनके गीत और गायकी दोनो ही हमें बाबासाहब के कार्य की याद दिलाते हैं। गीत 'भिमायन' ने बाबासाहब का जीवन चरित्र अपने सुर में महाराष्ट्र के कोने-कोने में पहुंचा दिया है। बाबासाहब के विचार और बाबासाहब का आंदोलन और भी मजबूत करने का महान कार्य लोकशाहीर लोक कवियों ने किया है। कुछ कलावंत स्कूल भी नहीं गये थे उन्हें बारहखड़ी के सिवाय कुछ नहीं आता था परंतु बाबासाहब की शक्ति एवं प्रेरणा ऐसी थी कि गूंगे को भी जबान आती थी।

समाज से कोई भी सेवा न लेते हुए कोई अपेक्षा न करते हुए केवल बाबासाहब को लोगों के मन में पहुँचने की अन्तः प्रेरणा कवि राजानंद गड़पायले की थी। इस कवि ने कभी भी यह दावा नहीं किया कि वह कोई कालजयी ग्रंथ की रचना कर रहा है। उसने यह भी नहीं कहा कि इससे उसे कोई मान-प्रतिष्ठा की अपेकषा है। भीमनिष्ठा, प्रामाणिकता और अविरत कार्य करने का उनका मानस था। उससे ही उन्होंने बहुत सारी शाहीरी को एवं कविता को जन्म दिया। यही कविताएं और शाहिरी लोगों के दिलों पर लिख दी गई। आज भी लोग कवि राजानंदजी का आदर करते हैं। इसलिए उनके गीत सभी जनमानस में प्रचलित हैं। यही उनका उद्देश था। यही उनके कविता का मूल्य है। बाबासाहब के शाहिरी गीत लिखने वाले के लाइन में राजानंदजी का नाम अग्रेसित है। इसलिए अनेक कवियों एवं साहित्यिकों ने कवि राजानंदजी को अपना गुरू माना है। उन्होंने बाबासाहब के कार्यों का कोई भी पहलू नहीं छोडा है। अपने गीतों के माध्यम से बाबासाहब को लोगों के सामने खड़ा कर दिया। बाबासाहब के जन्म से लेकर उनके महापरिनिर्वाण तक जो भी कार्य उन्होंने किये हैं वह सब लोगों के दिलों-दिमाग पर बिठाने का काम किया।

राजानंदजी अपने समाज में हो रहे अत्याचार , अन्याय आदि विषय को ही समाज और लोगों के सामने रखने का कार्य किया। नामांतर जैसे प्रश्न पर उन्होंने बहुत लिखा और समाज को बताया की हम जब तक एक साथ नहीं रहते तब तक यह लोग हम पर अन्याय , अत्याचार करते रहेंगे। इसलिए हमें एक साथ रहना कितना आवश्यक है। घाटकोपर जैसे प्रकरण को भी उन्होंने बड़ी ही दर्द भरी कहानी के माध्यम से गाया और लोगों के मन में आशावाद निर्माण किया। कवि राजानंदजी ने जब से आंदोलन में कुदे तब वे आगे ही आगे चलते गये। फिर पीछे मुड़कर उन्होंने कभी देखा ही नहीं। उनके सामने केवल

बाबासाहब का मिशन ही दिखता था। उन्हें अपने उम्र की भी परवाह नहीं थी। अपने बुढ़ापे में भी वह उतना ही कार्य करते थे जितना वह पहले करते थे। वे स्वयं को भीम का सिपाही कहते थे। वे कहते थे जब बाबासाहब अपने महापरिनिर्वाण तक कार्य कर सकते हैं तो मैं क्यों ना करू ? ऐसी उनकी सोच थी। ऐसे महान कलावंत को अभिवादन करना और उनके कार्य को भी दर्शाना महत्वपूर्ण हो जाता है।

उनके विद्रोही गीतों से समाज में क्रांति के नगारे बजने लगे। उनकी कविता ने मरी हुई जिंदगी जी रहे पिछड़े वर्ग में जीने की नई उम्मीद जगा दी। बहुत ही बेवकूफ और अज्ञानी लोगों के संगत में रहने के बावजूद भी उनकी कलम कभी भी रुकी नहीं। वे जिस बस्ती में पैदा हुए उस बस्ती का नाम यवतमाल जिले के गांव-गांव और शहर-शहर में हर इंसान जानता है। उस बस्ती का नाम है पाटिपूरा है जिसको अभी क्रांतिस्थल के नाम से आंदोलनकारी जानते हैं। बंगाली कुर्ता और पायजामा यही वेश और कंधों पर शबनम उसमें एक कापी बस इन्हीं चीजों के सहारे उनका सफर तय हुआ करता था। खुद बाबासाहब का लिखा प्रशस्ति पत्र उन्हें मिला तो काव्य प्रांत के वो राजा बन गये। उन्होंने बुद्ध के सत्य के विचार को दूर-दूर तक फैलाने वाला आनंद और सभी पिछले वर्गो को अपने गीतों से उनमें संजीवनी के प्राण फूँका। वे लोगों के लंकानाथ से राजानंद बन गये। ऐसी महान विभूति को हम कभी भूल नहीं सकते। जब तक उनके गीतों के स्वर हर इंसान के दिलों पर राज करेंगे उस वक्त तक अनादीकाल तक राजानंद जीवित ही रहेंगे । 'गीत भीमायन' यह उनका अजरामर स्मारक बनके सभी दिलों पर राज करेगा।

कवि का विश्व और कवि का जीना यह संसार के परे होता है। उनका ध्येय और ध्येयवाद सबसे अलग होता है। कवि ने जो देखा जो अनुभव किया जो सहा वह अपने शब्दों में वह लोगों को बताते हैं। अपने मन की पकड़ वे कभी ढ़ीली नहीं होने देते। कवि राजानंदजी तो अंबेडकरमय हो गये थे। उन्हें सभी ओर बाबासाहब ही दिखाई देते थे। क्योंकि उनका अंतर्मन अंबेडकरी विचारों से भरा था। बाबासाहब राजानंदजी का सांस और विश्वास भी है। इसलिए उन्होंने अपने जीवन काल में बाबासाहब के मिशन को आगे बढ़ाने का कार्य किया। ऐसे महाकवि का परिनिर्वाण 8 मार्च सन् 2000 को पूना में हुआ। हम ऐसे महान कवि को इस लघु शोध प्रबंध के माध्यम से आदरांजली समर्पित करते हैं।

*** भवतु सब्ब मंगलम ***